|| जैन भवन ||

तित्थयर

वर्ष : २८ अंक : ३ जून २००४

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कमास्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Groundnut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant:
Post Box No.5
Lucknow Road
Sitapur-2261001 (U.P.)
Ph : 242017/42397/
42073 (05862)
Gram - Sethia- Sitapur
Fax : 242790 (05862)

Registered Office:
143, Cotton Street
Kolkata - 700 007
Ph : 2238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office:
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph : 22201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
FAX : 22200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २८ | अंक - ३, जून, | २००४

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2268-2655,

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655
and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Kolkata - 700 007 Phone : 2241-1006

संपादन
श्रीमती लता बोथरा

॥ जैन भवन ॥

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	तेजस्काय के बारे में उठाये जाने वाले प्रश्नों का खुलासा	डॉ० जीवराज जैन	१०९
२.	करुण - हत्या	डॉ० जीवराज जैन	११५
३.	बान्दा का देवालय :	श्री सुभाष राय	१२७
४.	श्रीचन्द्रराज चरित्र		१३१

कवरपृष्ठ : जैसलमेर के ज्ञान भंडार से प्राप्त श्री सरस्वती देवी का चित्र।

Composed by:

Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

"विज्ञान के छात्र द्वारा सजीव तेजस्काय के बारे में उठाये जाने वाले प्रश्नों का खुलासा"

डॉ० जीवराज जैन

प्रश्न १. आगम वर्णित अग्निकाय के विज्ञान की दृष्टि से, क्या लक्षण होने चाहिये ?

उत्तर– आगम में, आज की वैज्ञानिक अवधारणा के अनुसार, अग्नि के सभी लक्षण एकत्र करके एक जगह नहीं बताये गये हैं। विभिन्न आगमों में अग्निकाय के जो उदाहरण दिये है, या उनके गुण बताये है, उसके अनुसार आज के विज्ञान की भाषा में निम्नलिखित ५ लक्षण समझ में आते हैं–

१. यह एक जलाने की रासायनिक क्रिया हैं।

२. इस क्रिया में ताप और प्रकाश का उत्सर्जन होता है।

३. इसमें वायु के साथ रासायनिक क्रिया होती है।

४. यह रासायनिक क्रिया 'स्वपोषी' (spontaneous reaction) होती है। यानि एक बार शुरू होने पर यह क्रिया तब तक स्वतः चलती रहेगी, जब तक ईधन व वायु मिलती रहेगी। आगम के उदाहरणों में वायु का मतलब केवल ऑक्सीजन गैस से मिश्रित प्राकृतिक हवा से ही नहीं है, बल्कि अन्य प्रकार के गैस पदार्थों से भी होता है। जैसे भगवती सूत्र में 'सिगडी' की अग्नि के बारे में कहा गया है कि वायुकाय के पैदा हुए बिना अग्निकाय प्रज्वलित नहीं होता / रहता है। यहाँ जो वायुकाय पैदा होता है, वह मुख्यतः कार्बन-डाई-ऑक्साइड व सल्फर-डाई-ऑक्साइड होता है।

प्रश्न २. क्या हवा के साथ जलने की रासायनिक क्रिया होने से ही सचित्त अग्निकाय बनती हैं ?

उत्तर– हाँ, यदि हम रासायनिक क्रिया वाली अग्नि के इस लक्षण को ही लगाते हैं, तब तो इसी प्रकार की स्थिति बनती है। जैसे अंगारे की, मुर्मुर की अग्नि, सिगड़ी या भट्टी की अग्नि, दीपक की अग्नि आदि।

लेकिन यदि हम बिजली के हीटर या बल्ब की बात करते हैं, तो यह एक दूसरे प्रकार का तेजस्काय नजर आता है। यह बादलों में चमकती बिजली तड़ित के सदृश विद्युत्तकाय की श्रेणी का तेजस्काय हो सकता है। इसमें हवा के साथ जलने वाली अग्निकाय का होना जरूरी नहीं हैं। वह कभी-कभी विद्युत्तकाय के साथ परिस्थितिवश उत्पन्न हो भी सकती है या नहीं भी हो सकती है।

प्रश्न ३. आगम में अग्निकाय के अलवा तड़ित विद्युत्त के रूप में जो तेजस्काय के जीव बताये हैं, वे वैज्ञानिक दृष्टि से क्या है?

उत्तर- बादलों में जो बिजली चमकती है, वह विद्युत्त के आवेशों से लदे बादलों का निरावेशन (discharge) है। इसमें दो बादलों के बीच की कुचालक हवा, बहुत उच्च वोल्टेज (तीस हजार वोल्ट तक देखा गया है) पर आयनीकरण की भौतिक क्रिया द्वारा गर्म आयनों का प्लाज्मा बनाती है। यह हमें तेज चमक के रूप में दिखाई देती है। इस तड़ित को विद्युत्तकाय के रूप में बताया गया है। यह ईंधन के जलने की रासायनिक क्रिया द्वारा उत्पन्न साधारण अग्निकाय से एक भिन्न प्रकार की आयनीकरण की भौतिक क्रिया से उत्पन्न तेजस्काय है।

प्रश्न ४. तड़ित के बुझने (निरावेशन) के बाद उस स्थान पर हवा की नाइट्रोजन आदि से उत्पन्न नाइट्रोजन ऑक्साइड N_2O, NO तथा ओजोन आदि गैस पायी जाती है तो क्या हवा की ऑक्सीजन और नाइट्रोजन गैस के जलने से ही तड़ित उत्पन्न होती है?

उत्तर- तड़ित तेजस्काय मूलतः आयनीकरण की भौतिक क्रिया का परिणाम है। इसमें उच्च ताप, प्रकाश व दबाव (ध्वनि) का उत्सर्जन होता है। प्लाज्मा में हवा के गर्म आयन बनते हैं। इसके उच्च ताप में या ताप से वहाँ उपलब्ध हवा के आयनों के जलने की भी संभावना रहती है। अतः तेजसकाय के पैदा होने के बाद उसके उच्च ताप के प्रभाव से हवा में अग्निकाय के जीव भी पैदा हो सकते हैं। इसके जलने की प्रक्रिया से N_2O, O_3 (ओजोन) आदि गैसें, पार्श्व-क्रिया के रूप में उत्पन्न होती हैं। यह क्रिया प्लाज्मा के बाहर या बुझने के बाद होती है। लेकिन यह जलने जैसी स्वपोषी क्रिया नहीं हैं।

प्रश्न ५. क्या आगम में सचित्त अग्निकाय और सचित्त विद्युत्तकाय के रूप में तेजस्काय का अलग-अलग वर्णन मिलता है?

उत्तर- आगम में तेजस्काय (तेऊकाय), अग्निकाय व विद्युत्त का वर्णन मिलता है। उस जमाने में पायी जाने वाली विभिन्न प्रकार की अग्नि का वर्णन मिलता है। जैसे अंगारा, ज्वाला, जलती हुई मशाल, उल्का, पटाखा आदि की अग्नि। इसके साथ प्राकृतिक रूप से उपलब्ध तड़ित का उदाहरण देकर विद्युतकाय को भी दर्शाया गया है। इसके अलवा संघारिस--समुट्ठिए कहकर भविष्य में घर्षण से पैदा होने वाले सचित्त तेजस्काय (तेउकाय) का समावेश किया गया है। चुम्बकीय रेखाओं को काटता हुआ, जब कोई रोटर उससे घर्षण पैदा करता है तो आज के जमाने की कृत्रिम विद्युत्त भी पैदा हो जाती है।

वैसे आगम में अग्निकुमार व विद्युत्तकुमार नाम के दो प्रकार के भवनपति देवताओं के दंडक मिलते हैं। यद्यपि आगम में तेजस्काय का लिखित प्रकार से स्पष्ट दो विभाग तो नहीं किया है, तथापि आगम में किये गये भेदों तथा लक्षणों से ऐसा विभाग करना (वर्गीकरण) आगम सम्मत ही प्रतीत होता है। आगम में तो बादर अग्नि के भेदों में एक भेद विद्युत का भी किया है। वहाँ पर आकाशीय विद्युत्त या कृत्रिम विद्युत्त ऐसा कोई विशेषण नहीं लगाया है। कृत्रिम विद्युत उस युग में नहीं होने पर भी सर्वज्ञों के ज्ञान से बाहर नहीं थी। इसी कारण आगमकारों ने बिना विशेषण वाली केवल विद्युत्त कहा है।

प्रश्न ६. भगवती सूत्र में जो कहा गया है कि दीये में न तो तेल जलता है और न रूई जलती है बल्कि दीप-शिखा जलती है, या जलते घर के बारे में स्पष्ट किया गया है कि न लकड़ी जलती है, न बिस्तर जलता है, बल्कि अग्नि जलती है, तो इसका वैज्ञानिक दृष्टि से क्या खुलासा है?

उत्तर- विज्ञान जानता है कि जलने में द्रव्य / ईंधन के इलेक्ट्रोन उच्च स्थिति-ऊर्जा से निकलकर स्थायी लेकिन निम्न स्थिति-ऊर्जा में आ जाते हैं तथा वहाँ ऑक्सीजन के इलेक्ट्रोन की कक्ष में भागीदारी स्थापित करते हैं या उस कक्ष में स्थानांतर हो जाते हैं। दोनों स्थिति-ऊर्जा का अंतर ताप व प्रकाश की ऊर्जा में बदल जाता है। ऊर्जा युक्त इलेक्ट्रोन-द्रव्य का

जहाँ स्थानांतर होता है, वहाँ ही अग्नि के जलने की रासायनिक क्रिया संपन्न होती है। यानि दीये में यह क्रिया गैस रूपी लौ (दीप-शिखा) में या जलती लकड़ी के उस हिस्से में अग्नि के जलने में होती हैं, जहाँ वास्तव में इलेक्ट्रोन का स्थानान्तरण हो रहा होता है। लकड़ी, तेल वगैरह तो केवल उस अग्निकाय का भोजन मात्र होता है।

प्रश्न ७. आगम में जब तड़ित को सचित्त तेजस्काय के रूप में प्ररूपित किया गया है तो क्या आज की कृत्रिम विद्युत्त को भी सचित्त तेजस्काय मानना चाहिए ?

उत्तर- हालांकि तड़ित और कृत्रिम-बिजली दोनों एक ही प्रकार की विद्युत हैं, यानि दोनों में ही इलेक्ट्रोन द्रव्य की गतिज-ऊर्जा होती है (इलेक्ट्रोन का प्रवाह), फिर भी दोनों की शक्ति व प्रभाव में फर्क है। यहाँ यह भी ध्यान देने की बात है कि जो तड़ित हमें दिखाई देती है, वो आगम में सचित्त तेजस्काय मानी गई है (पन्नवणा)। हमें वास्तव में जो दिखाई देता है, वो है हवा का गर्म प्लाज्मा। जिसमें आयनीकरण की क्रिया से बने हवा के आयनों से ताप और प्रकाश उत्सर्जित होते हैं। बिजली के उच्च वोल्टेज के कारण गर्म प्लाजमा बनता है तथा बिजली (इलेक्ट्रोन) का प्रवाह होता है। गहन चिन्तन से यह प्रश्न उठता है कि क्या उस उच्च वोल्टेज के कारण उत्पन्न बिजली के प्रवाह को सचित्त कहा गया है या उस वोल्टेज से बने गर्म प्लाज्मा को? **क्या इलेक्ट्रोन के प्रवाह से विद्युत्तकाय की योनि बनती है या हवा के आयनीकरण से?** हालांकि दोनों का अस्तित्व या वजूद वोल्टेज के कारण है।

पहली स्थिति में जहाँ भी इलेक्ट्रोन का प्रवाह होता है, वहाँ विद्युत्तकाय की योनि बनती है। जबकि दूसरी स्थिति में विद्युत्त प्रवाह को गौण मानकर, उसके प्रभाव से यानि आयनीकरण से चमकदार प्लाज्मा बनता है, उसको ही विद्युत्तकाय की योनि बनने का कारण माना गया है।

आगमविदों को यदि इसका स्पष्ट विश्लेषण आगम में नहीं मिलता है, तो दोनों ही सम्भावनाओं को संदेह से परे मान लेना अधिक उचित लगता है।

प्रश्न ८. बिजली के स्विच में जो चिन्गारी (spark) निकलती है, वो क्या है? क्या हर प्रकार की चिन्गारी सचित्त विद्युतकाय है?

उत्तर- जहाँ भी बिजली का स्विच ऑन/ऑफ होता है, वहाँ चिन्गारी निकलने की बहुत सम्भावना रहती है। यह स्पार्क भी आकाशीय विद्युत के समान ही एक प्लाज्मा रूप होती है। स्विच में रही हुई हवा में, स्विचिंग के समय, बिजली की वोल्टेज के कारण आयनीकरण होता है। जितनी ज्यादा वोल्टेज होगी, उतनी ही तीव्र और प्रभावशाली चिन्गारी होगी। यह आसपास के ज्वलनशील पदार्थों को जलाने में भी सक्षम होती है। अतः यह सजीव तेजसकाय की श्रेणी में आती है।

स्पार्क को रोकने के लिए, ऐसे स्विच को हवा के बजाय अज्वलनशील तेल में डुबोकर रखते हैं। स्पार्क इरोजन मशीन में उस धातु की भाप से स्पार्क बनती है, जिसकी मशीनिंग करनी होती है। उस स्पार्क को बहते हुए केरोसिन-तेल आदि से ढक कर रखा जाता है।

अति उच्च वोल्टेज के स्विच को तो वेक्यूम में रखने का प्रयास रहता है, जिससे स्पार्क ही पैदा न हो। (वेक्यूम सर्किट ब्रेकर) इसमें भी यदि स्पर्श-स्थल के धातु का गर्मी से वाष्पीकृत होना संभव हो तो उसमें भी स्पार्क बन सकती है।

यहाँ ध्यान देने की बात है कि लोहे के स्पार्क-टेस्ट में निकलती स्पार्क अलग प्रकार की होती है। ये स्पार्क ग्राईडिंग-व्हील के घर्षण से उत्पन्न लोहे के अति गर्म कण होते है, जो हवा के संयोग से जलकर खाक (लोहे के ऑक्साइड) बना देते हैं। यह चिन्गारी विद्युत्तकाय की श्रेणी के बजाय अग्निकाय की श्रेणी में आती है, जैसे कि चकमक की अग्नि।

लेकिन वेल्डिंग का चाप (arc) तो तड़ित के समान ही प्लाज्मा होता है। इसमें ज्यादातर गर्म धातु की वाष्पीकृत गैस होती है। वायुमण्डल की हवा का हिस्सा बहुत कम होता है। इसी प्रकार आर्क-भट्टियों का चाप भी सचित्त विद्युत्तकाय होना चाहिए।

प्रश्न ९. जुगनु की अग्नि व जठराग्नि में क्या फर्क है?

उत्तर- विज्ञान के हिसाब से **जुगनु** का उद्योत एक जलने की रासायनिक क्रिया है। जब जुगनु सांस लेता है तो वो शरीर के अंदर जाती हवा के कुछ भाग को एक दूसरी नली से वहाँ ले जा सकता है, जहाँ पर वैसे रसायन का लेप रहता है जो आसानी से ऑक्सीकृत हो (जल) सकता है। इसके जलने की विशेषता यह है कि इसकी ८०% तक की रासायनिक

ऊर्जा तो प्रकाश में बदलती है तथा २०% से भी कम ऊर्जा ताप में बदलती है। यह जलने की क्रिया सचित्त अग्निकाय है। लेकिन जो प्रकाश निकलता है वह अचित्त उद्योत होता है।

शरीर में आहार–पाचन की क्रिया (जठराग्नि) भी एक धीमी रासायनिक क्रिया होती है। शरीर के कोषाणुओं में ग्लूकोज आदि आक्सीकृत होकर पानी (H_2O) कार्बन-डाई-आक्साइड (CO_2) आदि बनाते है। तथा बहुत सी ताप–ऊर्जा पैदा करते हैं। यह शरीर के तापक्रम को भी बनाये रखती है तथा मॉस-पेशियों को ऊर्जा से संपन्न अणु की आपूर्ति करती है। यह एक बहुत ही नियंत्रित रासायनिक क्रिया है, जिससे क्रिया–स्थल का तापक्रम ज्यादा बढ़ नहीं पाये। इसमें प्रकाश का उत्सर्जन नहीं होता है। अतः सचित्त अग्निकाय नहीं है।

प्रश्न १०. आगामों में जो कई अन्य प्रकार की अग्नियों का वर्णन मिलता हैः जैसे नरक की, तेजोलेश्या की व इन्द के वज्र की अग्नि आदि, तो क्या उनको भी सचित्त तेजसकाय में वर्गीकृत कर सकते है?

उत्तर– नरक के जीवों को दुख देने के लिए परमाधर्मिकों के द्वारा वैक्रिय लब्धि से, यहाँ की अग्नि से भी अधिक उष्णतावाली अग्नि की विकुर्वणा (रचना) की जाती है। चूँकि यह अग्नि के समान दीखते हुए भी काष्ठ आदि ईंधन से उत्पन्न नहीं होती है, अतः इसको अकाष्ठ–अग्नि भी कहा है। जिस प्रकार तीर्थकरों के समवशरण में देवता जो विकुर्वित फूलों की वर्षा करते हैं, उनको अचित्त कहा जाता है, वैसे ही यह भी वैक्रिय वर्गणा के पुद्गलों से विकुर्वित होने के कारण अचित्त होती है।

जब इंद्र अपने शत्रु के पीछे वज्र फेंकता है तब वैक्रिय लब्धि के द्वारा उसमें से हजारों चिन्गारियाँ, ज्वालाएं निकलने लगती है। वैक्रिय शक्ति से ही वो निर्देशित भी होता है। अग्नि व तड़ित जैसी विद्युत के समान होते हुए भी वैक्रिय पुद्गलों से बने होने के कारण वह अचित्त समझी जाती है।

साधु की तेजोलेश्या के पुद्गलों को जैसे अचित, अवभासक एवं तापक कहा है, आगमकारों ने विद्युत का वैसा ही उल्लेख नहीं करके, उसे बादर तेजसकाय के जीवों में परिगणन किया है।

करुण—हत्या

Mercy-Killing

डॉ० जीवराज जैन

तालिका

१. करुण–हत्या क्या है?

२. स्वैच्छिक वरण के विभिन्न पहलू

a) i) व्याकुल अवस्था में हत्या................

ii) अंतिम आंतरिक भावना से अनभिज्ञता................

b) (करुण–हत्या की) शर्तों में दोष................

i) उपयोगिता का पहलू............

ii) बोझ की मानसिकता............

c) वस्तु स्थिति....................

३. **करुण—हत्या के पक्ष के तर्क**................

i) चिकित्सा संस्थान में उम्मीदें................

ii) बेहोशी की हालत में अधिकार..............

iii) सभ्य समाज का तोहफा

a) तोहफे की अवधारणा.................

b) तोहफा पाने का अधिकार.................

iv) **प्रत्युत्तर**

a) प्राण-हरण एक दण्ड है.....................

b) विकसित सभ्यता के स्तर का मापदण्ड................

c) लेबल बदलना.................

4. **सामाजिक अनुमोदना में रंध्र**.....................

a) बहुत लोग याचना की धुंधली परिधि में..................

i) मानसिक यातना में......................

ii) जीवन–मरण की इच्छा की अनभिज्ञता......... ....

iii) कानून की लाचारी....................

iv) नीदर लैंड की पहल......................

v) आत्मघात एक व्यक्तिगत निर्णय..................

vi) हत्या का मानसिक व नैतिक बोध व बोझ...............

b) **वक्र बुद्धि का परिष्कार**

5. **अन्य तर्क व प्रश्न**...............

i) कर्मानुसार मरण

a) उत्तर................

b) मारने की भावना तथा उसका विश्लेषण.............

ii) करुण-हत्या की भावना तथा उसका विश्लेषण............

a) अनधिकृत हत्या.................

b) आर्त्तध्यान........................

6. **श्रेष्ठ समाधान**............

मरणांतिक संलेखना यानि समाधिमरण

i) मूल सोच

ii) शिक्षा व प्रशिक्षण की जरूरत

iii) संलेखना-स्वयं में एक साध्य..............

iv) कषाय भावों से निजात

v) समाज का नैतिक स्तर

vi) करुण-हत्या का सार्थक, सकारात्मक व आशा-जनक विकल्प

करुण—हत्या

1. करुण-हत्या क्या है :

एक विचारधारा, जो पाश्चात्य सभ्यता के साथ बार-बार उभरती आ रही है, वो है करुण-हत्या की। उस विचारधारा के मुताबिक जब एक इंसान

i) अपनी उपयोगिता खो देता है, तथा

ii) परिवार व समाज पर बोझ बन जाता है

iii) असाध्य रोग से जीवन की अंतिमावस्था में पहुंच चुका है, तब

उसको कानूनन अधिकार होना चाहिये कि वह अपना जीवन समाप्त कर सके– चाहे अपने आप या फिर अपने डॉक्टर की सहायता से। यदि वह बूढ़ा हो गया है और असाध्य रोग से तड़फ रहा है तो स्वैच्छिक-मृत्यु की इजाजत होनी चाहिये। एक दर्द रहित मृत्यु को वरण करने की स्वतन्त्रता होनी चाहिये।

2. **स्वैच्छिक वरण के विभिन्न पहलू:**

ai) **व्याकुल अवस्था में हत्या :**

यह एक आखिरी समय में की जाने वाली हत्या ही है। या तो व्यक्ति दुःख से व्याकुल होकर आत्मघात कर रहा होता है, या दया–भावना से प्रेरित होकर कोई तीसरा आदमी उस दुःखी मनुष्य यानि संज्ञी-पंचेन्द्रिय को जानते हुए हत्या कर रहा होता है। इस तरह इस प्रक्रिया में दोनों को–मारने वाले तथा मरने वाले को हिंसा पाप-कर्म का बंध होना दिखाई देता है।

aii) **अंतिम आंतरिक भावना से अनभिज्ञता :**

जहर या अन्य रसायन देकर जब मरने वाले का जीवन दीप बुझाया जाता है, तो दर्द–नाशक दवाओं के कारण उसका मरना प्रत्यक्ष रूप में शांन्तिपूर्ण नजर आ सकता है, लेकिन परोक्ष रूप में उसकी आंतरिक भावनाओं का पता नहीं लगता है। उसका आर्त्तध्यान से बचना तो संदेह–पूर्ण ही लगता है। जिसको अचेतन/असंज्ञी अवस्था में पहुंचाया जाता है, उसको समभाव में स्थिर होने का कोई पूर्व प्रशिक्षण नहीं दिया जाता है। अतः उस अवस्था में पहुंचकर पाप-कर्म की निर्जरा करने से तो वह अवश्य ही वंचित हो जाता है। दुर्भाग्य से वह अपने शरीर का आखिरी दम तक सदुपयोग नहीं कर पाता है।

b) **शर्तों में दोष**

bi) **उपयोगिता का पहलू :**

करुण-हत्या की पहली शर्त है– आदमी अपनी उपयोगिता खो देता है यह उपयोगिता शायद परिवार व समाज के लिये सोची गई है। यानि पर के लिये। लेकिन व्यक्ति या मनुष्य जीवन की उपयोगिता उसकी स्व-आत्मा के लिये ज्यादा महत्वपूर्ण है। यह सिद्धान्त हमारी संस्कृति से जुड़ा है। मरते दम तक व्यक्ति यानि उसके शरीर की उपयोगिता बनी रहती है, उसके पाप कर्म की निर्जरा करने के लिए। मरते समय यदि व्यक्ति समभाव में स्थिर होकर

मृत्यु का वरण कर सके तो अपनी आत्म-शक्ति को केन्द्रित करके, बुद्धि की शुद्धि को धनीभूत कर सकता है।

bii) **बोझ की मानसिकता :**

दूसरी शर्त है, जब व्यक्ति परिवार व समाज पर बोझ बन जाता है।

i) वास्तव में एक पापी व्यक्ति ही **बोझ** बन सकता है। हमारी संस्कृति में आदमी अपना जीवन सफल बनाता है, परिवार, समाज की सेवा के साथ-साथ अपनी आत्मा की उन्नति करके। कर्म–सिद्धान्त के अनुसार हर व्यक्ति अपने शरीर/देह की सहायता से अपने पापकर्म की निर्जरा करके अपने जीवन को सफल बनाता है, आत्मा को निर्मल बनाता है। यहां तक कि उसे परमात्मा के स्तर तक ले जा सकता है।

ii) भारतीय समाज में वैसे भी परिवार के बुजुर्गो के प्रति आदरभाव रखा जाता है। उनको सैद्धांतिक तौर पर कभी भी बोझ नहीं माना जा सकता। यदि ऐसा मानना शुरू कर दे, तो वह समाज अपने कर्तव्य से विमुख होता है। वह दोहरी भाषा बोलकर अपने आप से छलावा करता है। अतः इस तरह की छूट हमारे सभ्य समाज के उद्देश्य से मेल नहीं खाती है।

c) **वस्तु–स्थितिः**

इस करुण-हत्या में मरने की इच्छा प्रमुख रूप से झलकती है। वह दुख, निराशा या पीड़ा से आक्रांत होकर शीघ्र-मरण यानि आत्मघात की कामना करता है। अपनी देह का त्याग करना चाहता है। यह सब अनैतिक है, सभ्य समाज को अमान्य है तथा कानूनन अपराध माना गया है। यह ध्यान में रहे कि सभ्य समाज के पास पहले से ही इसका नैतिक, गुरूत्तर व उच्चस्तरीय समाधान खोज कर रखा हुआ है। इस विकल्प पर विचार आगे किया जायेगा।

3. **करूण–हया के पक्ष के तर्कः**

i) **चिकित्सा–संस्थान में उम्मीदेंः**

जब मरीज बीमारी में आखिरी सांस गिन रहा है-जैसे शिरो व्यथा से लकवा हो गया, यानि अचेतन हो गया तथा उसके ठीक होने की उच्चतम

चिकित्सा-संस्था को भी कोई उम्मीद न हो-तब यदि वह मरीज मरना चाहता है या डॉक्टर मारना चाहता है-तो उसे अनुमति होनी चाहिये, करुण-हत्या करने की।

सवाल :-

सभी समझते हैं कि उम्र का समय कोई नहीं जानता है। उच्चतम संस्थान भी अपने अनुमान में कभी कभी गलत सिद्ध होते रहते हैं। यानि उनका अनुमान भी अनुमान ही होता है, कोई भविष्यवाणी नहीं। फिर कितने रोगी उच्चतम संस्थान तक पहुंच पाते हैं? यानि आखिरी-अवस्था का सर्टिफिकेट केवल साधन-संपन्न व्यक्ति को ही मिल सकता है।

ii) बेहोशी (कोमा) की हालत में अधिकार :

जब मरीज को अपने जीवित रहने का होश न हो, ठीक से क्रम बद्ध सोच पाने में असमर्थ हो, यानि सक्षमता पूर्वक सोच पाने में तथा अपने विचार दूसरों से व्यक्त करने में असमर्थ हो, तो उसे करुण-हत्या की अनुमति हो।

सवालिया निशानः

यह बिडम्बना पूर्ण अनुमति है। सोच का स्वतः सिद्ध दिवालियापन है। इन उपरोक्त अवस्थाओं में ९० प्रतिशत निर्णय तो केवल कर्ता पर निर्भर करते हैं, जो कि व्यक्ति-सापेक्ष निर्णय होंगे। यदि मरीज मरना चाहता भी है, तो चूंकि वो सही तरीके से सोच सकने में असमर्थ है, यानि युक्ति संगत सोच नहीं सकता है, अतः उसका निर्णय व इच्छा का भी यथार्थ होना शक्य ही है।

फिर भी :

इन सबमें मरने की इच्छा साफ नजर आती है। वह पीड़ा के कारण, दुख व अन्य भय के कारण शीघ्र-मरण की कामना करता है। यह आत्मघात की कामना किसी भी अवस्था में नैतिक नहीं मानी गई है।

iii) सभ्य समाज का तोहफा :

एक जिम्मेदार समाज अपने एक सदस्य को करूण-हत्या के लिए 'प्राणहर-इंजेक्शन' के रूप में एक तोहफा-एक उपहार देता है, जिससे वो अपनी असहा पीड़ा से मुक्ति पा सके।

a) तोहफे की अवधारणा :

इंजेक्शन को तो तोहफे की संज्ञा दी जा सकती है, लेकिन प्राण-हरण को, उस प्राण को, जो ईश्वर की अद्‌भुत देन मानी गई है, कभी भी उपहार नहीं माना जा सकता है। जब प्राण हरना ही जिसका उद्देश्य है, तो फिर वह तोहफा किस प्राणी को? क्या उस बची हुई मृत काया को–एक जड़ देह को उपहार देने का छलावा या नाटक तो नहीं किया जा रहा है? यह तो एक कुतर्क की भाषा का जाल नजर आ रहा है। किसी के प्राण हरने का तोहफा तो पीछे बचे परिजन या परिवार के लिए हो सकता है। प्राण हरे गये व्यक्ति के लिए तो वह एक सजा ही हो गई, क्योंकि वह उस उपहार को देखने के लिए स्वयं रहा ही नहीं।

b) तोहफा पाने का अधिकार

दूसरा तर्क दिया जाता है कि जब एक व्यक्ति को, जिसकी सभी इन्द्रियाँ, अंग, मन व बुद्धि पूरी तरह से कार्यशील है, सक्षम है, मृत्यु/ प्राण हत्या द्वारा दण्डित किया जा सकता है, तो फिर एक उस व्यक्ति को, जो एक या अनेक अंग हानि के कारण या उनके विकृत हो जाने के कारण असह्य व लाइलाज पीड़ा से आक्रांत है, भुक्त है तो समाज द्वारा मृत्यु का उपहार क्यों नहीं दिया जा सकता है? मृत्यु-उपहार को क्यों दण्डनीय समझा जाता है।

iv) प्रत्युत्तर

a) मृत्यु / प्राण हरण एक दण्ड है :

चूंकि प्राण, जीवन व शरीर भगवान की देन है, किसी को उससे वंचित करना, उस वंचित व्यक्ति के लिए तो दण्डरूप ही होता है। तथा इसी तर्क से, प्राण वंचित करने वाला भी दण्डनीय बनता है। यह उपयुक्त है कि समाज को मृत्यु-दण्ड देने का अधिकार भी नहीं होना चाहिए। यह एक उच्चस्तरीयत सभ्यता का तकाजा है। प्राचीन काल में या अविकसित समाज में, उन व्यक्तियों को, जो शेष समाज के लिये खतरे के रूप में चिन्हित किये जाते थे, मृत्यु-दण्ड देना आम बात थी। अपराध कर देने वालों को यह दण्ड देना, एक भय के रूप में भी उचित समझा जाता था।

एक समाज के अपने बुद्धि-स्तर के हिसाब से यह भय के रूप में भी अपराध निवारण के लिए कारगर सिद्ध होता था। एक प्रबुद्ध व उच्च सभ्यता वाले समाज में इसकी जरूरत नहीं है, क्योंकि अपराध-निवारण के अन्य विकल्प भी वहां अच्छे कारगर सिद्ध हो सकते हैं।

b) विकसित सभ्यता के स्तर का मापदण्ड :

अतः समाज को इस दण्डनीय अपराध से अपने आपको बचाने की दिशा में अग्रसर होना चाहिए। यानि प्राण दण्ड पर रोक लगानी चाहिये–उसे प्रतिबंधित कर देना चाहिए। यही उसी सभ्यता के विकास के स्तर का मापदण्ड होना चाहिये। यही प्रकृति का तकाजा है।

c) लेबल बदलना :

चूंकि मरणासन्न या मरणास्थ व्यक्ति ने जब कोई अपराध नहीं किया है तो फिर कोई भी समाज उसको क्यों दण्डित कर सकता है। केवल प्राणदण्ड के बिल्ले पर प्राणउपहार लिख देने से उस व्यक्ति के जीने का अधिकार तथा जीने का मूल अभिप्राय नहीं बदला जा सकता है। अतः बिल्ला बदलने की मनोवृत्ति को एक सभ्य समाज अपनी सहमति नहीं दे सकता।

4. सामाजिक अनुमोदना में रंध्र :

हम क्यों समाज को ऐसे दण्डनीय–कार्यों से बोझिल बनाना चाहते हैं? सिर्फ इसीलिये कि चंद लोगों ने इसकी करूणा-पूर्वक अपील की है? सिर्फ इसलिए कि कुछ लोगों ने अपने आपको बोझ समझा है? यदि इस कार्य को सहमति का कानूनी जामा पहना दिया जाता है तो फिर,

a) बहुत लोग याचना की धुंधली परिधि में :

बहुत लोग कुतर्क का घेरा डालकर अपनी इच्छा, मर्जी से करूण-हत्या की याचना करेंगे। उदाहरण स्वरूप :–

i) मानसिक यातना में :

बहुत से माता-पिता अपने बच्चों की अपंगता / अपूर्णता से अपने आपको असहाय महसूस कर रहे हैं। उनको असह्य मानसिक पीड़ा हो रही है। कइयों को तो अपराध-बोध भी होता है कि शायद वो सही समय पर

चूक कर गये है। तत्कालीन परिस्थिति में दिशा मोड़ हो सकता था। यह मानसिक पीड़ा ज्यादा कष्टदायक है बनिस्पत शारीरिक पीड़ा के। ऐसे असहाय, अपराध बोध से ग्रसित, शर्म से पीड़ित बुजुर्गों को असह्य मानसिक पीड़ा से छुटकारा पाने के लिए करुण-हत्या का सहारा सबसे अच्छा विकल्प होगा।

ii) जीवन-मरण की इच्छा की अनभिज्ञता :

जो प्राणी अचेतन अवस्था में चला गया है, या उसकी समझ खत्म हो गई हो कि वो कोई जीवित-प्राणी है भी। यदि उसकी संवेदनशीलता बिलकुल लुप्त हो गई हो, तो, उसके अभिभावक उसको करुण-हत्या का उपहार समाज से दिला देंगे।

हालांकि इसका सही निर्णय कोई नहीं कर पायेगा कि वो अचेतन या 'जीवित-लोथ' खुद मरना चाहता भी है या नहीं। हो सकता है कि वो इसी अवस्था से संतुष्ट है तथा चाहता है कि उसको बराबर समय पर बस खाना मिलता रहे, जिन्दगी में बिना कोई अन्य सरोकार रखे हुए। हमें क्या अधिकार है यह निर्णय करने का या सोचने का कि उसका मर जाना ही बेहत्तर है। कई बार तो पहले से बताई हुई इच्छाएँ भी मरणासन्न अवस्था में परिस्थितिवश बिल्कुल बदल जाती है। मरणांतिक इच्छाओं का जानना बहुत मुश्किल व अव्यवहारिक लगता है।

यह ज्ञातव्य है कि जिन्दा रहने की इच्छा मनुष्य में अन्य प्राणियों की तरह ही बहुत ही मजबूत होती है। ऐसा समाचार छपता रहता है कि तीसरे व्यक्ति की सहायता से आत्मघात करते वक्त लोगों ने मरीज को मदद के लिए तड़फता हुआ देखा है। लेकिन उसको मदद नहीं मिली।

iii) कानून की लाचारी :

पक्के प्रमाण के अभाव में हालांकि तीसरा व्यक्ति कानून के फंदे से बच सकता है, लेकिन ऐसी परिस्थिति किसी भी सहायता-प्रदत्त आत्मघात में बन सकती है। डॉक्टर कब आत्मघात में सहायता करे या कब न करें? क्या एक आदमी की जिन्दगी पूर्ण रूप से दूसरे मनुष्य के हाथ की कठपुतली

बनी रहे? डॉक्टर लोग तो मरीज के अपने 'मृत्यु' से युद्ध को दूसरों की नजर में अदृश्य बना सकने में भी सक्षम होते हैं। अतः यह सब अनैतिक है और अनैतिक समझा जाना ही ज्यादा अच्छा है।

iv) **नीदरलैंड की पहल :**

नीदरलैंड ने इस सिद्धान्त को मानते हुए कि किसी को भी दूसरे आदमी की हत्या करने का अधिकार नहीं है, मृत्युदंड की सजा को अपराधियों के लिये समाप्त कर दी है। लेकिन 'करुण-हत्या' को कानून का दर्जा देकर एक ईश्वरीय अधिकार को दूसरे अधिकार से अदला बदली कर दिया है। यह तर्क की दोहरी-बात को संपुष्ट करता है।

v) **आत्मघात एक व्यक्तिगत निर्णय होता है।** हो सकता है पाश्चात् सभ्यता में, यदि कोई आत्मघात करना चाहता है, और उसके परिजन उसको मदद करते हों, जब वो अपने से आत्मघात नहीं कर सकता हो, तो उसको सही माना जाता हो!

लेकिन इससे यह अवधारणा नहीं बनानी चाहिए कि संपूर्ण समाज की इस प्रक्रिया में स्वीकृति है या उसी हिसाब से समाज के हर एक व्यक्ति की अनुमोदना है।

vi) **हत्या का मानसिक व नैतिक बोध व बोझ :**

वास्तव में करुण-हत्या और स्पष्ट-हत्या के अन्तर की भेद रेखा इतनी पतली है कि इसका निर्णय भ्रमकारी व चालाक इंसान पर या अविवेकी इंसान की संदिग्धता पर, उसकी अपरिपक्वता पर नहीं छोड़ा जा सकता। कम से कम हमलोग तो दूसरे इंसान की हत्या की जिम्मेदारी का बोझ ढोना नहीं चाहते।

b) **वक्र बुद्धि का परिष्कार :**

उपरोक्त तर्को का विश्लेषण करने से एक बात स्पष्ट समझ में आती है कि

i) उन तर्क करने वालों को अपनी वक्र बुद्धि शीघ्र सीधी करके, उसे सही दिशा में, मानव के उच्च मूल्यों को स्थापित करने में, संवारने में

लगानी चाहिए। न कि खुद को भ्रमित होने में या अन्यों को भ्रमित करने में मग्न होना चाहिए।

ii) दूसरा प्रश्न उठता है कि फिर उस असहाय पीड़ा से आक्रांत मरणासन्न व्यक्तियों का समाज के पास क्या उत्तर है, क्या समाधान है?

5. अन्य तर्क व प्रश्न :

i) कर्म के अनुसार मरण :

बहुत धर्मों में माना गया है कि हर प्राणी अपने कर्मों के अनुसार मरते हैं तथा दु:ख पाते हैं। फिर मारने वाले को पाप क्यों लगता है?

a) **उत्तर :** मारने वाले को न कोई ईश्वरीय अधिकार है और न कोई संवैधानिक अधिकार दे सकता है, ईश्वर प्रदत्त जीवन को समाप्त करने का। अतः यदि कोई दूसरे को मारने की क्रिया करता है या उस क्रिया की अनुमोदना करता है, तो पाप का दोष का भागी तो बनता ही है।

b) मारने की भावना तथा उसका विश्लेषण :

मारने की क्रूर भावना या दुष्ट प्रवृत्ति (परिणाम) रखने के कारण मारने वाले को पाप लगता है; इस सिद्धान्त के मुताबिक यदि विश्लेषण करें तो पता चलेगा कि यदि अनजाने में किसी जीव की हिंसा हो जाती है तो भी पाप हिंसा लगती है। इसको अयत्ना का पाप, यानि यत्ना, विवेक/सावधानी नहीं रखी, उसका पाप लगता है। यदि निर्दयी या कठोर (क्रूर) भाव से हिंसा की है, तब घोर हिंसा का पाप लगता है।

ii) करुण-हत्या की भावना का विश्लेषण

a) अनधिकृत हत्या :

जब दया / करुणा के वशीभूत होकर हत्या की जाती है, तब प्रत्यक्ष रूप में दया का भाव जरूर नजर आता है, लेकिन यह अनधिकृत हत्या है। इसमें दो प्रकार का दोष / पाप लगता है। पहला अनधिकृत दोष (ईश्वरीय अधिकार) लगता है। दूसरा जानबूझकर, समझते हुए हिंसा की भावना से हिंसा करने से-मारने का हिंसा का दोष तो अवश्य ही लगेगा।

b) आर्त्तध्यान :

अंतिम क्षण में हो सकता है उस व्यक्ति को और भी अधिक असहाय

कष्ट होता हो। उसके असम भाव में, आर्त्तभाव में अभिवृद्धि की सम्भावना ज्यादा रहती है। यदि जीने की कोशिश जागृत हो, यानि मरने के विरुद्ध मन या भावना बनती है, तब तो हिंसा का, दोष और गाढ़ा हो जाता है।

6. श्रेष्ठ समाधान

उपरोक्त सभी उलझनों का, विभिन्न परस्पर विरोधी प्रवृत्तियों का एक श्रेष्ठ हल, जो हमारे मनीषियों ने खोज निकाला था, वह है, **मरणांतिक संलेखना** या समाधि मरण।

i) हालांकि ये **दोनों प्रक्रियाएँ अंतिम समय** में अपनाई जाती हैं, लेकिन दोनों प्रकार की स्वैच्छिक कार्यों को सम्पन्न करने की **मूल सोच** में रात-दिन का अंतर रहता है।

१. एक कष्ट से पीड़ित होकर, उससे निजात पाने के लिये देह को त्यागने की-आत्मघात करने की तीव्र इच्छा रखता है, तो दूसरे में समताभाव से, बिना मरण की कोई इच्छा रखे, देहोत्सर्ग करने वक्त देह के ममत्व को, उसकी आसक्ति को छोड़ता है। वास्तव में अंतिम क्षण तक वह देह के साधन का समुचित सदुपयोग करता रहता है, अपने दोष कर्म को हटाने के लिये।

२. पहली कितनी दोषपूर्ण क्रिया है, सोच है, तो दूसरी कितनी निर्मल, प्राकृतिक eco friendly और विवेकपूर्ण उचित क्रिया है! वह किसी भी अनुराग, भय व आसक्ति से आक्रांत व अनुरंजित नहीं रहता है। साधुत्व की सीमा पर पहुंचने का इतना आसान तरीका शायद और नहीं हो सकता है।

ii) लेकिन जरूरत है कि इंसान को संलेखना की पूरी शिक्षा, पूर्व जानकारी एक व्यवस्थागत तरीके से दे देने की। जिससे हर व्यक्ति इसका प्रशिक्षण लेकर पूर्वभ्यास कर सके। पूर्वाभ्यास कर लेने से, इस योग द्वारा-तप द्वारा उसको मृत्यु के प्रति अपना नजरिया बदलने में, समताभाव रखने में सहायता मिलेगी। इसकी पूरी जानकारी संलेखना के विवेचन में मिल सकती है।

iii) सब प्राणियों के प्रति दया और प्रेम रखने का उपदेश देने के साथ-साथ यदि कोई धर्म-दर्शन अपने व्यक्तियों को स्वयं पर हिंसा का कष्ट पहुंचाने की हिमायत करता है, तो निश्चिय ही वह परस्पर विरोधी, सामंजस्यहीन

आचरण प्रसारित करने का दोषी होगा। लेकिन संलेखना तो ऐसा अपने पर कष्ट पहुंचने की साधना या प्रक्रिया न होकर, स्वयं में एक समाप्ति है, साध्य है। दूसरे नजरिये से देखा जाय तो प्रतीत होगा कि जब अंत स्पष्ट तौर पर समीप आ गया हो, तब यह एक सार्थक प्रयास है अपने आध्यात्मिक स्तर को सुधारने का।

iv) एक व्यक्ति जब करुण-हत्या को स्वैच्छा से या कुछ अन्य अवस्था में किसी डॉक्टर के निर्णय से वरण करता है तो वह स्पष्ट रूप से निराशा, दीनता, घृणा या मोह के कषाय भावों में लिप्त रहता है। जबकि संलेखना का साधक उस परिस्थिति में इच्छा, क्रोध व घृणा से दूर रहता है, विरक्त रहता है।

v) अविलम्ब आवश्यकता है समाज के नैतिक स्तर को, सामूहिक सोच को सही दिशा प्रदान कर, उस सोच के स्तर को ऊपर उठाने की। मनुष्य के उच्च आदर्शों में श्रद्धा व आस्था पुर्नस्थापित करने की। प्रशिक्षण द्वारा विचारों को परिष्कृत करने की तथा मानसिक संतुलन रखने के पूर्वभ्यास करने की।

vi) अंतिम समय में आत्मोत्थान का सकारात्मक रूख रखते हुए, बिना सुख-दुख की आकांक्षा के, शुभ प्रवृत्ति में लीन होना ही पंडित मरण है। यही निराशाजन्य करुण-हत्या का सही और सार्थक विकल्प है।

बान्दा का देवालय :

श्री सुभाष राय

पुरुलिया के पत्थर से बने देवालयों में पूर्ण स्थिति में बान्दा का देवालय खड़ा है। सरकारी देखरेख में होने के कारण और कालीसाधन दास नाम के संरक्षक के कारण इस देवालय का भाग्य दूसरे देवालयों से कहीं अच्छा है। रघुनाथपुर से जो सीधा रास्ता चेलियामा की तरफ चला गया है, उस पर से जाते समय बानादा गाँव पड़ता है। मूल सड़क से १ किलोमीटर के फासले पर यह देवालय बना हुआ है।

देवालय से थोड़ी दूर पर ईंटों का विशाल खंडहर है। लगता है कि यहाँ पत्थर के देवालय के साथ-साथ कई एक ईंटों के भी देवालय बने थे जैसे पाड़ा, पाकबिड़रा, देउलघाटा में पाया जाता है। अभी ये सारे विलुप्त हो चुके हैं। फिर भी उनके खंडहर पड़े हुए हैं। यहाँ इस खंडहर को खोदने पर भी लगता है बहुत सारे पुरातात्विक अवशेष निकल आएँगे। अभी भी इस इलाके में कुँआ खोदने पर, घर की भीत काटने पर, पुराने समय की मुद्रा, औजार आदि निकल आते हैं। इन्हीं से प्रमाणित होता है यहाँ एक मानव सभ्यता विद्यमान थी। किसी भी कारणवश वे स्थानांतरित हो चुके हैं। अभी जो परिवार यहां बस रहे है, वे यहां के आदि निवासी नहीं है। वे तेलकूपी के निवासी है, किन्तु १९५७ में दामोदर वैली कॉरपोरेशन के पानी में तेलकूपी डूब जाने पर वहाँ के लोग यहां आकर बसने लगे।

बान्दा का देवालय, रेख शैली में बना देवालय है। एक विशाल पत्थर के अहाते पर देवालय खड़ा है। अहाता लगभग १५० फुट चौड़ा और २५० फुट लम्बा है। देवालय उत्तर दिशा की तरफ बना है। सामने का बड़ा बरामदा पत्थर से बना हुआ था, इसका कुछ अंश अब भी बरकरार है, पर काफी अंश पर अभी तैयारी होना बाकी है। लेकिन सम्पूर्ण अहाते को देखने से पता चलता है कि यह बरामदा कितना विशाल था।

देवालय के प्रवेश पथ की ऊँचाई ६$^{१}/_{२}$ फुट है, चौड़ाई लगभग ३ फुट की है। चार बड़े पत्थर के टुकड़ों को खोदकर प्रवेश द्वार का निर्माण

किया गया है। पत्थरों के पास रेखाएँ खुदी हुई है और उनपर चित्रकारी की गई है। कोई बाँसुरी बजा रहा है, कोई नृत्य कर रहा है आदि। परन्तु इनपर सीमेन्ट का लेप लगाने के कारण ज्यादातर चित्र नष्ट हो चुके है। सरकारी कामकाज में संरक्षण के नाम पर प्राचीन संग्रहों को बिगाड़ने का अच्छा उदाहरण इससे मिलता है।

बान्दा का रेख देवालय अपनी भित्ति भूमि पर वर्गक्षैत्रीय है। नीचे के अंश का परिमाप लम्बाई व चौड़ाई में १४ फुट है। देवालय की आनुमानिक ऊँचाई ७२ फुट है। बन्धना अंश के परवर्ती पत्थर के खंड़ों की आकृति स्तर पर काटे हुए कलश की तरह है। पत्थरों को ऐसी कुशलता से बिठाय गया है कि दोनों के बीच एक पतली छूरी भी नहीं जा पाती। नीचे के हिस्से में पत्थरों के जुड़ान ने लोहें की पिन जैसी जुड़ान औजारों का व्यवहार हुआ है, जिसे देखने पर आश्चर्य होता है कि उस जमाने में किस प्रकार बिना किसी उन्नत औजार के ऐसी वैज्ञानिक तरीकों से मंदिर बनाना संभव हुआ था। बान्दा के देवालय जैसा पाड़ा, तेलकूपी, देउलघाटा, बुधपुर, पाकबिड़रा आदि के देवालय भी बने हुए थे। लेकिन सरकारी नजर न पड़ने के कारण ये सारे देवालय सदा के लिए मिट चुके है। इनकी बनावट की वैज्ञानिक शैली भी बान्दा के देवालय जैसा ही था, इसका प्रमाण आज भी देखने को मिलता है।

देवालयों के तीनों तरफ कलाकारी नजर में आती है। पहले हो सकता है, सामने देवी-देवताओं की मूर्ति बनी हुई थी या कलाकारी किये गये खंभे बनाए गये थे, जो अब नहीं है। लेकिन टूटे अंशों को देखकर इनके होने का आभास होता है। पूरब के दीवार के निचले अंश में लगभग दो फुट ऊँचाई में एक हाथी का मुँह बना हुआ है। भीतर के जल निष्कासन के लिये इसका व्यवहार होता था। हाथी के मुँह से निकला पानी पत्थर के चहबच्चे में जमा होता था। अभी वह नहीं है। देउलघाटा, पाकबिड़रा तेलकूपी के देवालयों में भी ऐसी जल निष्कासन प्रणाली पाई जाती है। लेकिन हर तरफ ही हाथी का मुँह बना हो, ऐसी बात भी नहीं है। तीन दीवार के बन्धवा वाले अंश में तीन जगहें बनी हुई है। ये चौड़ाई में २ फुट और लम्बाई में ३ फुट है। ऊपर की तरफ पूरब दिशा के दीवार पर लता, फूल, पत्ते और डाल पर बैठा पक्षी खुदा हुआ है। फिर रेखा से अंकित नक्शा जैसा चित्र बना हुआ है। सबसे अंत में

जो आमलक है, उसकी आकृति प्रस्फुटित कमल जैसी है और जिससे पाँच पद्म या कमल की आकृति के खंड को ऊपर एक ही साथ जोड़कर एक पूर्णांग रूप दान करता हुआ दिखाया गया है। इस तरह की शिला पुरुलिया के लगभग सारे खंडहरों में देखने को मिलती है।

इस देवालय में फिलहाल लोहे का गेट लगाया गया है। जैसे पाकबिड़रा के देवालय में लगाया गया है। पूरब से पश्चिम की दीवार की तरफ बनायी हुई एक वेदी। इसकी लम्बाई ६$^{१}/_{२}$ फुट और चौड़ाई ३ फुट की है। फिलहाल वेदी पर सीमेंट लगवाकर इसकी प्राचीनता को नष्ट किया गया है। कई साल पहले तक देवालय के भीतर वेदी के सम्मुख पूरब दिशा की तरफ एक चौकोना सा गर्भगृह था, जिसे हमलोगों ने बचपन में देखा है। स्थानीय चरवाहे बाँस की लट्ठी को गड्ढे के भीतर घुसाकर उसकी गहराई नापते थे। अंदर क्या था आजतक हमें नहीं पता चला और यह बात काफी रहस्यमय सी प्रतीत होती है। लेकिन आज उस गर्भगृह के मुँह को बन्द कर दिया गया है। पत्थर और सीमेन्ट से ढँककर वह आँखों से ओझल हो गया। कक्ष के भीतर कोई खोदा हुआ अंश नहीं है, जिसमें चीजें रखी जा सके। बाहर से यह देवालय बड़ा लगते हुए भी भीतर से यह उतना विशाल नहीं लगता।

इस समय भीतर किसी प्रकार की मूर्ति नजर नहीं आती। अंचल के लोगों के अनुसार जो मूर्तियाँ देवालय में थी, वे अनादरित हो रही थी। उनकी पूजा अर्चना नहीं होती थी। इस पर चोरबाजारुओं का हंगामा, मूर्ति चुराने की कोशिश आदि बातों से परेशान गाँव वालों ने पास की पोखरी में सारी मूर्तियों को डाल दिया है। कईयों का मानना है कि स्थानीय चेलियामा गांव के महामाया मंदिर में मूर्तियों को लाकर रखा गया है। यह ग्राम्य देवी का मंदिर है जो प्राचीन **'हो'** जाति के लोगों द्वारा प्रतिष्ठित है। **'हो'** की कुलदेवी महामाया थी। इस समय चेलिया में **'हो'** जाति के लोग नहीं रहते पर उनके दिये गये नाम यथावत रह गये हैं। यहाँ की पोखरियों के नामों के साथ **'हो'** प्रयत्न युक्त हो चुका है जैसे– चाँदाहो, रावाहो, गवाहो, या राहो, कुयाराँ धहो, गलहो आदि। इस जाति का संधान हमें राँची और हजारीबाग जिलों में मिलता है। आज भी ये लोग अपने दिवंगत लोगों के अस्थि-विसर्जन करने के लिए हर साल तेलकूपी या करगाली के दामोदर घाट में आते है। दामोदर को वे

गंगा के समान पवित्र मानते हैं। जो भी हो—इस समय चेलियामा के महामाया मंदिर में एक सीमेंट से बने वेदी में जो मूर्तियाँ देखने को मिलती हैं, वे हैं—

ऋषभदेव : यह मूर्ति खंडित है। सिर्फ सिर का अंश ही बचा हुआ है। फि भी मस्तक का आकार और आयतन देखकर अनुमान लगाया जा सकता है कि यह लगभग ४ फुट ऊँची मूर्ति रही होगी, जो कायोत्सर्ग मुद्रा में खड़ी रही होगी। दोनों तरफ तीर्थंकर की मूर्तियाँ खुदी हुई थी। पर आज सबकुछ नष्ट हो चुका है। ऋषभदेव खंडित मस्तक के साथ आभामंडल बना हुआ है। यह मूर्ति जनता की आँखों में शिव मूर्ति के रूप में ही परिचित है और हर दिन उसी प्रकार जलप्रवाह के साथ इसकी पूजा भी होती है। हो सकता है कि यहीं मूर्ति बान्दा के देवालयों में वेदी पर प्रतिष्ठित रही हो।

गजारूढ़ा : यह आकृति में छोटी है और हाथी पर आसीन है। मूर्ति लगभग नष्ट हो चुकी है, असल में यह अजितनाथ की शासनदेवी है। बान्दा के देवालय में अजितनाथ की मूर्ति प्रतिष्ठित रही होगी।

तीर्थंकर मूर्ति : लगभग २ फुट ऊँची दो तीर्थंकर मूर्तियाँ वेदी पर प्रतिष्ठित की गई है। दोनों ही मूर्ति कायोत्सर्ग की मुद्रा में खड़ी है। दोनों तरफ दो और दो चार ऋषभनाथ की मूर्ति खुदी हुई थी। सिन्दूर का लेप पड़ते-पड़ते लांछन चिह्न पूरी तरह घिस चुके हैं। समझा नहीं जा सकता कि ये तीर्थंकर की मूर्तियां है। इनकी बनावट पाकबिड़रा या बारहमास्या की मूर्तियों जेसी थी।

इन मूर्तियों के अलावे और विभिन्न सब मूर्तियों के टूटे अंश एक क्षय प्राप्त बैल की मूर्ति, गंधर्व-गंधर्वी के टूटे ढाँचे सब लाकर इस वेदी पर रखे गये है। ये मूर्तियाँ षष्ठी मैया के नाम से ग्रामीण लोगों में पूजी जाती है। गाँव की महिलाएँ संतान-संतति की कामना से यहाँ मन्नतें माँगती है। यहाँ भी जैन देवी देवताओं का हिन्दुत्व में रूपांतरण हो चुका है।

क्रमशः

श्रीचन्द्रराज चरित्र

जीवन एक संग्राम है। इसमें कई दांव पेच खेलने होते हैं! धीर और वीर पुरुष ही इसमें फतेह पा जाते हैं। संसार में हार और जीत दोनों साथ-साथ चलती हैं। जो चूक गया उसको चौरासी के गोते खाने पड़ते हैं। इसमें अनुकूल और प्रतिकूल ऐसे दो प्रकार के संघर्ष हैं। विवेकी विजयी होता है, और अविवेक का कचूमर निकल जाता है।

राजा श्रीचन्द्र भी अपने जीवन संग्राम का ठीक ढंग से संचालन कर रहे थे। रुद्रपल्ली में राजा बज्रसिंह के यहां—ससुराल के स्वर्ग-सुखों को भोगते हुए उन्होंने एक रोज कनकपुर का ख्याल किया। राजा बज्रसिंह से बड़े आग्रह से आज्ञा लेकर रति और प्रीति के समान परम सौंदर्य शालिनी दोनों स्त्रियों को साथ लेकर कामदेव के जैसे कुमार ने कनकपुर की ओर प्रस्थान किया। दल-बल के साथ नवलक्ष देश की सीमा पर उन्होंने पड़ाव डाल दिया।

इसके बाद कुछ गुप्त चरों के साथ राजा पद्मनाभ को, मंत्रिराज गुणचन्द्र को और प्रधान लक्ष्मणदेव को अपने आगमन की सूचना भेज दी। सूचना पाते ही वे लोग बड़ी तेजी से वहां आ पहुँचे। राजकीय ढंग से राजा श्रीचन्द्र ने सबकी सलामी ली। युद्ध के समाचार पूछे—कि क्या हाल चाल है?। प्रधान मंत्री गुणचन्द्र ने हाथ जोड़कर कहा— राजाधिराज! गुणविभ्रम अत्यन्त परांक्रमी और दुर्जेय शत्रु है। वह घेरा डाले पड़ा है टस से मस नहीं हो रहा। वह कहता है दश गुणा दण्ड लेकर ही हटूंगा। राजेन्द्र! आज तक तो इसका पलड़ा भारी ही रहा है। सारा कनकपुर एक प्रकार से इसकी कैद में दुःख पा रहा है। उसे छह राजाओं की सहायता प्राप्त है। वह हमारे देश को जबरन् छीनना चाहता है।

महाराज! हम बड़े भारी पशो-पेच में थे कि क्या करना? इतने में आपका शुभागमन हो गया। आपके शुभागमन से आज हमारी सेना का रंग

और ही हो गया है। हमारे सेनापति सेना के साथ भारी प्रसन्नता से उत्साहित हो उठे हैं। जोश का एक नया तूफान उफन रहा है।

यह सुनते ही राजा श्रीचन्द्र का शरीर वीर रस की साक्षात् मूर्ति हो गया। आंखे लाल हो गई। भौंहे कमान की तरह तन गईं। शत्रुओं पर प्रहार करने वाली भुजायें फड़क उठीं। वह शीघ्रता से सबमें वीरता के भाव भरता हुआ चन्द्रहास खड्ग को हाथ में लेकर सहस्र किरण सूर्य के समान अपनी सेना में प्रदीप्त हो उठा। राज राजेश्वर श्रीचन्द्र को वहाँ आये जानकर शत्रुओं के सिपाही कांप उठे। उनके हृदयों में खलबल मच गई। मुखमंडल निस्तेज हो गये। चेहरों पर मारे भय के हवाइयां उड़ने लगीं। अब उन्होनें अपनी जीत की आशा को छोड़ दी।

राजाधिराज श्रीचन्द्र ने साम-दाम भेद और दण्ड की राजनीति में चतुर अपने दूत को गुणविभ्रम के पास भेजा, और कहलाया की तुमने पहिले कनकपुर नरेश से जो दण्ड लिया है, उसको सौगुना करके हमारे खजाने में जमा करा दो। अन्यथा लड़ने की पूरी तैयारी कर मोर्चे पर आजाओ।

राजा गुणविभ्रम को दूतने महाराज श्रीचन्द्र का सन्देश सुना दिया। सुनते ही वह आग-बबूला हो गया। अंदर से बौखला कर उपर दृढ़ता दिखाते हुए उसने कहा—जा अपने उस छोकरे से कह देना कि तुझे युद्ध के मैदान में ही मैं जवाब दूंगा।

दूत लौट आया। महाराज श्रीचन्द्र अपने सन्देश का जवाब सुनकर अपनी फौजों को मैदाने जंग में पहुँचने का आदेश दे दिया। दोनों ओर से मजबूत मोर्चे लग गये। दोनों सेनायें अपने-अपने स्वामी की आज्ञा पाकर आपस में भिड़ गई। बड़ा भयंकर युद्ध होने लगा। जयश्री कभी इधर और कभी उधर डोलती दिखाई देने लगी। राजा गुणविभ्रम ने मौका पाकर बाणों की भयंकर बौछार करके महाराज श्रीचन्द्र की सेना को तितर-बितर कर दिया।

अपनी सेना के पैर उखड़ रहे हैं, राजा पद्मनाम, वज्रसिंह और लक्ष्मण मंत्री घिरे जा रहे हैं। यह सब देख कर राजाधिराज श्रीचन्द्र शीघ्रता से हाथी पर सवार हो गये। शत्रु के निकट पहुँचकर कहने लगे कि–महोदय! अपनी कुशलता चाहते हो तो अब भी झुक जाओ, और यदि लड़ना ही है, तो आओ पहिले वार कर दो।

गुणविभ्रम ने कहा–कि अभी तू बच्चा है, युद्ध के मैदान से हट जा, यदि लौटने की इच्छा ही नहीं है, तो ले अपना शस्त्र संभाल ले। यह कह कर उसने श्रीचन्द्र पर तलवार का प्रहार किया। राजाधिराज श्रीचन्द्र ने बड़ी फुर्ती से अपने चन्द्रहास से उसे बीच में ही काट दिया। चन्द्रहास के सामने वह निस्तेज हो गया। श्रीचन्द्र ने गुण-विभ्रम को हाथी से गिरा दिया। सैनिकों ने उसे बेड़ियों में डाल दिया। बाकी के राजाओं को भी और उनकी सारी सेना को हराकर हिरासत में ले लिया। सभी पराजित अधिकारी अपराधियों की भाँति श्रीचन्द्र के सामने हाथ बांधे खड़े थे। विजयश्री कुमार से और कुमार विजयश्री से वर वधू के रूप में एक दूसरे से शोभा पा रहे थे।

कल्याणपुर में और उसके सातों देशों में अपने मंत्रियों को भेजकर श्रीचन्द्र ने अपनी आज्ञा प्रचलित करवा दी। कनकपुर में उसके निवासियों ने विजयी महाराज श्रीचन्द्रका नगर, हाट, मकान, मन्दिर, महल-राजमार्ग आदि खूब सजाकर जय-जय शब्दों से बड़े भारी समारोह के साथ स्वागत किया।

कुछ समय वहाँ ठहर कर कुमार अपनी दोनों स्त्रियों के और अधीनस्थ राजाओं के साथ मातृ दर्शन की उत्कण्ठा से श्री पर्वत पर बसे हुए अपने श्री चन्द्रपुर नगर की ओर चले। मार्ग में ही माता सूर्यवतीजी के पुत्ररत्न यानि भाई उत्पन्न होने की खुशी के समाचार कुमार को मिले। अपने भाई के उत्पन्न होने की खुशी में कुमार ने भारी समारोह किया। भारी खुशियाँ मनाई गई। सारे अधीनस्थ देशों में भी उत्सव आनन्द मनाये गये। राजा गुण विभ्रम को इस खुशी में कैद से छोड़ दिया गया। दूसरे भी कई कैदी छोड़े गये।

कुमार ने गुणविभ्रम का यथायोग्य सत्कार किया। उसने भी अपने सभी अपराधों के लिये विनीत भाव से क्षमा चाही। कुमार ने उसे अपने पास बिठाकर पुनः इज्जत प्रदान की। वहां से चलते हुए क्रमशः भारी ठाठ के साथ प्रवेश किया, जनता ने अपने राजा का पितृ प्रेम से स्वागत किया और राजा ने प्रजा को अपने पुत्रवात्सल्य से आनंदित किया। राजमहल में कुमार श्रीचन्द्र ने अपनी माता श्रीसूर्यवतीजी को बड़े विनीत भाव से प्रणाम किया। मदनसुन्दरी आदि बहुएँ सासूजी के पैरों पड़ीं। माता ने पुत्रवती हो, सौभाग्यवती हो, ऐसे आशीर्वाद दिये। राजाओं के मंत्रियों ने भी महारानी सूर्यवतीजी को प्रणाम किया। स्वागत शिष्टाचार खूब अच्छे ढंग से हुआ।

श्रीचन्द्र ने अपने छोटे भाई को गोदी में लिया, गुण लक्षणों के अनुसार उसका एकांगवरवीर ऐसा नाम रक्खा। राजाओं के नाम पत्र लिख गये। पत्र पाकर सभी राजा लोग श्रीचन्द्र की सेवा में आ उपस्थित हुए। कईयों ने कन्याएँ देकर, कईयों ने धन, रत्न, हाथी घोड़े आदि अपूर्व वस्तुएँ भेंटकर अपनी कृतज्ञता प्रकट की। पद्मिनी चन्द्रकला वामांग, वरचन्द्र, सुधीराज और धनंजय ये लोग भी एक बड़ी भारी सेना के साथ वहां आ पहुँचे।

कुमार के वैभव को देखकर सभी लोग बहुत खुश हुए। महाराज श्रीचन्द्र ने भी वामांग को सचिव, धनंजय को सेनापति इस प्रकार उन सबको अलग-अलग यथायोग्य पदों पर नियुक्त किये। रानी चन्द्रकला को महारानी बनाया। क्षत्रिय कुमार कुंजर को और मल्ल-भील को उचित शिक्षा के साथ वहीं श्रीपर्वत के रक्षाधिकारी कायम किये।

सारे परिवार के साथ श्रीचन्द्र ने भगवान श्रीजिनेश्वर देव के मंदिर में बंदन पूजन किया। अष्टान्हिक महोत्सव करके अपने सभ्यग्दर्शन को निर्मल किया। निर्ग्रंथ पंचमहाव्रत-धारी त्यागी संयमी साधु गुरुओं की सेवा भक्ति की। उनके सत्संग से विशेष धर्म-लाभ को प्राप्त किया।

तदनंतर अपनी माताजी को, भाई को, रानियों को मित्रों को, मंत्रियों को साथ लेकर भारी समारोह के साथ कुशस्थल की ओर महाराजा श्रीचन्द्रराज रवाना हुए। हाथी, घोड़े, रथ, मनुष्य, सैनिक, बैलों, ऊंटो, पालकियों आदि से

उनकी सेना लहराते हुए विशाल समुद्र की तरह शोभा पा रही थी। उस सेना के दबाव से शेषनाग विचलित हो उठा। कूर्मराज घबड़ा उठे। पृथ्वी अंदर को धँसने लगी। दिशाओं के हाथी कराह उठे। पैरों से उड़ी हुई धूल से आकाश में सूरज ढंक गया। पहाड़ कांपसे गये। समुद्रों में यावत् सारे संसार में हलचल मच गई।

पड़ाव पर पड़ाव करते हुए महाराजा श्रीचंद्रराज अपने अभीष्ट-स्थान की ओर बढ़ते जा रहे थे। मार्ग में स्थान-स्थान पर कहीं मन्दिर, कहीं धर्मशाला, कहीं किले कहीं प्याउएँ, कहीं नहरें आदि नव निर्माण करते और कराते जाते थे। क्रमशः वे कनकपुर पहुँचे। वहां कुछ दिन ठहर कर कल्याणपुर गये। राजा गुणविभ्रम को पहले की तरह पदथ किया। उनकी राजकन्या गुणवती से विवाह किया। मदन सुंदरी के मुंह से यहां सुवर्ण पुरुष आदि के वृतांत को सुनकर महारानी सूर्यवतीजी चंद्र कलाजी आदि सब लोग बड़े विस्मित हुए।

वहां से भी राजा को, गुणवती रानी को, एवं स्वर्ण पुरुष को, साथ लिया। जंगल में जहां पर बड़ के पेड़ में मणिगृह छिपा हुआ था। वहां से सार वस्तुएँ ग्रहण की रत्न चूड़ के मृत्यु-स्थान पर आये। उसके दाह स्थान पर एक जिन मन्दिर बनवाया। वहाँ से कान्ती पुरी गये कान्ती नरेश नरसिंह ने बड़े उत्सव के साथ नगर प्रवेश कराया, कान्ती के पास में ही बड़गाँव में गुणंधर कलाचार्य रह रहे थे। श्रीचन्द्र ने अपनी पत्नी सहित वहाँ जाकर गुरु और गुरुपत्नी को नमस्कार किया और अपूर्व भेंट अर्पण की। गुरु के पत्रों, कुटुम्बियों और बाँधवों आदि का भी यथा योग्य सत्कार किया। कलाचार्य ने भी अपने शिष्य श्रीचन्द्रकुमार को भूरि-भूरि आशीर्वाद दिये।

इसके बाद रानी प्रियंगुमंजरी और राजा नरसिंह साथ वह हेमपुर को गये। वहां पर मदनलपाल का पिता मकरध्वज राज्य करता था। मदनसुन्दरी ने श्रीचंद्र को अपना पति बनाया है यह सुनकर वे बहुत प्रसन्न हुए। उन दोनों के साथ फिर वहाँ से राजा श्रीचन्द्र चल कर कांपिल्य पुर आये। वहां पर बड़ी धूमधाम से उनका पुर प्रवेश हुआ। वहां पर उन्होंने अपनी माता के

आग्रह से कनकवती आदि चारों कन्याओं के साथ बड़ी सजधज और धूमधाम से विवाह किया।

वीणारव नामक गायक का भी नगर कहीं आस पास में ही थी। जब उसने सुना की महाराज श्रीचन्द्र कांपिल्यपुर में पधारे हुए हैं, तो वह भी वहां आ उपस्थित हुआ, उसने प्रसन्न होकर महाराजा की प्रशंसा के कई आश्चर्य उत्पन्न करने वाले श्लोक पढ़े। जैसे—

बल्गत्तुं गतुरंग-निष्ठुरतर-क्षुण्ण द्रणक्ष्मातले।
निर्भिन्न द्विप-कुंभ मौक्तिककण-व्याजेन बीजावलिं।।
खड्गस्ते वपतिस्मकुण्डलपते! लोक-त्रयीमण्डप-
प्राप्त पौढ़तमस्य कीर्तिलतिकागुल्मस्य निष्पत्तये।।

अर्थात् हे कुंडलेश्वर ! आपकी कीर्तिरूपी लता को पुष्पित बनाकर त्रिभुवन में फैलाने के लिये आपका घोड़ा रणभूमि को खोदकर बीज बोने योग्य बताना है और आपकी तलवार मदमस्त हाथियों के कुंभस्थलों को चीरकर उनमें से निकले हुए मुक्ता कणों को बीज के रूप में बोती है, तथा हताहतों से निकला हुआ रक्त उसकी सिंचाई करता है।

श्रीचन्द्र ने प्रसन्न होकर उसको पाँचलाख के मूल्य का धन दिया। औरों ने भी उसे यथा शक्ति इनाम देकर संतुष्ट किया। वह इनाम में पाये हुए सभी रत्न, सुवर्ण, आभूषणादि को लेकर श्रीचन्द्र की सराहना करता हुआ प्रसन्नता से अपने डेरे पर चला गया। रात्रि में चोर उसका सर्वस्व हरण करके ले गये। जब सुबह हुआ तो उसने अपने मालकी एकदम चोरी हो गई, देखी। घबड़ाते हुए उसने राज सभा में आकर श्रीचन्द्र से सारा हाल कह सुनाया। इस बात को सुनकर श्रीचन्द्र ने वहाँ के राजा जितशत्रु को उपालम्भ दिया।

तब जितशत्रु ने महाराज से निवेदन किया कि स्वामिन्! यहाँ पर तीन चोर हैं, और वे बहुत प्रयत्न करने पर भी पकड़े नहीं जा रहे हैं। उन्होंने इस नगर को चोरियां करके परेशान कर रक्खा है। यह उत्तर पाकर राजाधिराज श्रीचन्द्र ने वीणारव को पहले से दुगुना धन दिया। वह भी प्रदत्त धन राशि को लेकर पहले की तरह अपने डेरे पर चला गया।

इधर महाराज श्रीचन्द्र स्वयं गुटिका के प्रयोग से अदृश्य होकर रात्रि में नगर में इधर-उधर घूमने लगे। आधी रात के समय उन्होंने तीन मनुष्यों को कहीं देखा। गौर से देखने पर उन्होंने दो को तो अच्छी तरह पहचान लिया, मगर तीसरे को न पहचान सके। तब वे उनके काम देखने के विचार से वहीं रुक गये।

चोर आपस में विचार करने लगे। लोहखर ने कहा, यहाँ पर जो राजा आया है उसने गायक को कल से दुगुना धन दिया है सो चलो वहीं चलें। तब वज्रजंघ बोला, सुनो! आगन्तुक राजा के पास एक सुवर्ण-पुरुष सुना जाता है, सो चलकर उसे ही क्यों न चुरा लिया जाय जिससे अपना जन्मजन्मान्तर का दारिद्र ही दूर हो जाय। तुम अवस्वापिनी विद्या के जानकार और तुम्हारा भाई धन की गंध का जानकार है। तुम्हारा भतीजा मैं एक बार सूंघे हुए धन को गंध मात्र से ही जान लेता हूँ।

लोहकार ने उत्तर दिया, भाई! यह राजा बड़ा धर्मात्मा भाग्यशाली, न्यायी और परोपकारी है इसलिये इसका कोई कुछ भी हरण नहीं कर सकता। अपना किया हुआ उद्यम व्यर्थ जायगा। इस प्रकार सलाह करके लोहखर ने हाथ से कुछ धूल उठाई और उसे मंत्रित करके वीणारव के डेरे की ओर ऊपर को उछाल दी। फिर वे तीनों उस गायक के डेरे की ओर चले। उस मर्म को जानने वाले श्रीचन्द्र भी उनके पीछे हो लिये।

बाद में वे वहाँ जाकर गंधज्ञान से धन का अपहरण करके वापिस उसी जगह लौट आये और फिर वहाँ से नगर के बाहिर निकल गये। किसी एक मठ में पहुँचकर उन्होंने उसके पीछे की ओर एक बड़ी शिला को उखाड़ कर नीचे के भोंयरे में सब धन रख दिया। बाद में फिर उस शिला को उस पर रखकर उन्होंने बाबाओं का वेश बनाया और उस मठ में आकर सो गये। श्रीचंद्र इस क्रिया को देखकर अपने स्थान पर लौट आये।

इधर जब प्रातःकाल हुआ तो वीणारव जगा। उसको अपनी कुछ वस्तुएँ अस्त व्यवस्त पड़ी मिलीं। उसको चोरी होने का सन्देह हुआ। ज्योंही उसने जाकर अपना कोठा संभाला त्योंही वह चीख पड़ा। उसके हृदय में

घिग्घी सी बंध गई। उसका सर्वस्व चुराया जा चुका था! वह मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिरने को ही थी, कि साहस ने उसका साथ दिया। वह सम्हल गया। दौड़ता हुआ श्रीचन्द्र के पास आ पहुँचा। महाराज! मेरा तो आज भी फिर सब कुछ चला गया कहता हुआ उनके चरणों में गिर पड़ा और अपने भाग्य की निन्दा करने लगा।

यह सुनकर वहाँ पर उपस्थित, सेठ साहूकारों राजाओं और मंत्रियों के सामने कुण्डलपुर नरेश श्री चन्द्र ने राजा जितशत्रु को धिक्कारते हुए कहा, राजन्! आपके राज्य में बार-बार चोरियां होती हैं। प्रजा को सुख नहीं है। फिर आप क्या राज्य करते हैं? जिस राजा से अपने देश का शासन भी ठीक नहीं सम्हलता। उसकी इज्जत लोगों में कैसे रह सकती है? राजा जितशत्रु ने मारे लज्जा के सिर नीचा कर लिया।

श्रीचन्द्र ने सभा में एक बीड़ा रक्खा और सभी सदस्यों को सम्बोधित करते हुए बोला, जो कोई भी व्यक्ति किसी भी उपाय द्वारा चोरों को पकड़ लेगा उसको यहाँ मिली हुई विवाह की पहरामणी मैं दे दूंगा। सब लोगों ने उत्तर देते हुए कहा, महाराज! हम में से यहाँ कोई भी बीड़ा उठाने वाला नहीं है। इस प्रकार करते धरते कुछ न बन पड़ा और इस चर्चा में ही सूर्य सिर पर आ गया।

क्रमशः

D. SANDIP & COMPANY
107, Ratnadip Building, Phone : 2369 0054
Resi- Oberoi Gardens Thakur Village
Kandewali, East Mumbai, 'C' Wing flat No. 14/1404.
Phone : (R) 2886 8940

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2220-8105/2139,(Resi) 2329-0629/0319

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 2282-5234/0329

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 2226-2418, (Resi) 2475-2730, 2476-8730

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor, 24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071, Ph: 2247-7450, 2283-4662

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata- 700 029, Ph: 2464-1186,

ASHOK KUMAR RAIDANI
M/s. Ashok Trading Corporation
Dealing in All types of Blanket and General Order Supplier
6, Temple Street, Kolkata - 700 072
Ph: 2237-4132, 2236-2072

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
93/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2220 8967, (Resi) 2247 1750

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 2282-8181

CLUB BITES
Vegetarian Restaurant
At Lee Road
Call - 2280 1582

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Phone : (O) 2282-4649,
(Resi) 2247-2670

DR. K.B. SINGH (M.B.B.S.)
67, S.N. Pandit Road, Kolkata - 700 025
Ph: 2455-2081, 2454-7127, Chember- 2268-8670/4207

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 2220-2074/8958 (D) 2220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2220 9755
Resi: 2464-3235/1541, Fax: (033) 2464 0547

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Kolkata - 700 007
Ph: 2268-8677, 2269-6097

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
28, B.T. Road, Kolkata - 700 002
Ph: (O) 2268-9356/0950 (Fact). 2557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 2229-5047/9110

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 2248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment, 15/1 Chakrabaria Lane,
Kolkata - 700 026, Phone : 2476-1533639582

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2229 6256/8730/1029
Resi: 2247 6526/6638/22405126
Telex: 2021 2333, ARBI IN, Fax : 2226 0174

PRADIP KUMAR LUNAWAT
P-44 Dr. Sundari Mohan Avenue
Kolkata - 700 014, Phone : 2249-0103

M/S. POLY UDYOG
Unipack Industries
Manufacturers & Printers of HM; HDPE,
LD, LLDPE, BOPP PRINTED BAGS.
31-B, Jhowtalla Road
Kolkata - 700 017, Phone: 2247 9277, 2240 2825
Tele Fax: 22402825

SAROJ DUGAR
Fancy saree, bed covers
34/1J. Ballygunge Circular Road
Kolkata - 700 019, Phone: 2475 1458

VEEKEY ELECTRONICS
Madhur Electronics, 29/1B, Chandani Chowk
3rd floor, Kolkata - 700 013
Ph: 2352-8940/334-4140,(Resi) 2352-8387/9885

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-0874/9372, 2221-0246

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 2236-3028, 2237-4039

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-5229/5121

MOUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrella
45, Armenian Street, Kolkata - 700 001
Ph : (Shop) 2242-4483/2248-8086,
(O) 2268-1396/30924653, Fax : 2271-2151,

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)2270-1329, 2232-1033
Fax : 91-33-2702413

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Kolkata - 700 001 Ph: 2235-2076, 2235-5701

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East, Kolkata - 700 069

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 2273-1766, 2268-8846
Mobile: 9831028566, Resi : 2355-9641/7196

B.W.M.INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178, 25779, 25778
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151-202256 (Bikaner)

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA PARSON
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726,
Fax : 7147717607

V.S. JAIN
Royal Gems INC.
632 Vine Street, Suit# 421
Cincinnati OH 45202
Phone : 1-800-627-6339

RANJIT SINGHI
Singhi Exports
(P) Ltd.
P15 New C.I.T. Road
Kolkata - 700 073

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Ph : 001-217-355-0174/0187, e-mail : doogar@uiuc.edu

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

M/S. SETHIA OIL INDUSTRIES LTD.
Manufactureres of De oiled cakes & Refined oil.
Lucknow Road, PO. Sitapur - 261001 (U.P.)
Phone: 05862/42017/42073

M/S. BEEKAY VANIJYA PVT. LTD.
City Centre, 19, Synagogue Street
5th Floor, Room No. 5342535, Kolkata - 700 001
Phone: 2210-3239, 2232-0144, 2238-7281
Fax: 033-2210-3253 (M) 9831001739
e-mail : bktarfab@satyam.net.in

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं

WITH BEST WISHES

DEEPAK KUMAR SANDEEP KUMAR NAHATA
Dealers in Diamond
Manufactures of Precious & Semi Precious Ornaments
Burtolla Street, Kolkata - 700 007,
Phone: (G) 2268-0900 (M) 9830094325

DHANDHIA BROS
6/1 Hara Prasad Dey lane, Kolkata - 700 007
Phone: (R) 2269-6241/2950 (O) 2239-0581

SHRI MANILAL RAJENDRA KUMAR JAIN (DUSAJ)
Dealers : Diamond, Precious Stones, Semi Stones &
Readymade Ornaments,
6A, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 001
Phone: 2237 5869/6476
(Mobile): 98301017091, 9830142191

In the memory of Badindrapat Singhji Dugar
GAUTAM DUGAR
34/1/K, Ballygunge Circular Road
Kalkata - 700 019
Phone: (O) 2475-1109/6835
(R) 2474-3566, (M) 31022126

ARIHANT JEWELLERS
Shri Mahendra Singh Nahata
M/s BB Enterprises
8A, Metro Palaza, 8th Floor 1,Ho Chi Minh Sarani,
Kolkata - 700 071, Ph: 2288 1565 / 1603

M/s. MUKUND JEWELLERS
manufactures of American Diamand
Jewellery, Gold & Silver Goods &
Dealers in imitation Jewellery
P-37A, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Ph: 2232 3876

KAMAL SINGH KARNAWAT
7,Khelat Ghosh Lane, Kolkata - 700 006
Dealers in Diamonds Precious Stones
Ph: (R) 2259-3885, (M) 03332391278

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 2239-7607)

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 2455-3586

M/S. PARSON BROTHERS
18B, Sukeas Lane, Kolkata - 700 007
Phone: 2242-3870

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2248-8576/0669/1242
(Resi) 2225-5514, 2237-8208, 2229-1783

LILY SUKHANI
7, Bright Appartment, 7 Bright Street
Flat No. 7 C., Kolkata - 700 019 , Phone : 2287-0448

M.L. CHOPRA & CO.
Freight & Chartering Brokers
12-B, N. S. Road; Kolkata - 1
PH : 2220 5059 / 2220 1130, EMAIL : freya@cal.vsnl.co.in

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments &Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 2268-4755, (Resi) 2274-0817

ABL INTERNATIONAL LTD.
1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.
Ph: 2282-7615/7617/2726, Gram : Sudera

M/S. SHREE SILK STORE
House of :
Banarasi Sarees & Velvet Articles etc.
P-25, Kalakar Street, Jain Katra
Kolkata - 700 007
Phone: 2268 2671, 666 4422

SHIV KUMAR JAIN
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Ph: (Off) 2247-7880, 2247-8663,
Res) 2247-8128, 2247-9546

MAHENDRA TATER
147, M. G. Road
Kolkata - 700 007, Phone : 2227-1857

M/S. SARAT CHATTERJEE& CO. (VSP) PVT. LTD.
Regd Office 2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Ph: 2220-7162, 2261-0540, Fax : (91)(33)2220 6400
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

APARAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106, Ph: 2665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in / sona@cal3.vsnl.net.in

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007, Ph: 2269-1408

BADALIA GEMS PVT. LTD.
BADALIA HOUSE
66/3, Beadon Street, Kolkata - 700 006
Phone : (O) 2554-8999/8997 (R) 2533-9985
Fax : 033 5548999, e-mail : shashibadlia@usa.net

CREATIVE
12, Dargah Road, Post Box 16127, Kolkata - 700 017
Ph: 2240 3758 / 3450 / 1690 / 0514
Fax : (033) 2240 0098, 2247 1833

JAIPUR EMPORIUM JEWELLERS
Anandlok
227 A. J. C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: 2280-0494, 2287-2650, Resi : 2358-0602, (M) 31074937

RAJENDRA KUMAR GANDHI
Jewellers & Bankers
A-38/1 Gol Kothi, Varanasi
Phone : (O) 2333224 (R) 2454125, 2586460

FANCY VELVET CO.
154 Dharamtalla Street, Kolkata - 700 013
Phone : (O) 2236-8523 (R) 2284-8719 (M) 9831029197

MILLY CHORDIA
2303, 3rd nail, 6th Floor, Desence Colony
Indria Nagar, Bangalore-- 38, Phone : 2229-7608

DR. G. C. GULGULIA
10, middleton Street, Kolkata - 700 071
Ph: (R) 22291925 (C) 22174695

CALTRONIX
12 India Exchange Place, 3rd Floor, Kolkata - 700 001
Phone: 2220 1958/4110

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध, अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder : Late. Sikhar Chand Churoria

Kusum
QUALITY PRODUCT

Our Quality Product of :

- Anusandhan
- Kolkata Nasta
- Badsha Khan
- Picnic
- Raja
- Shubham
- Bhaonagari Ghantia
- Jocker
- Lajawab
- Papri Ghantia
- Rim Jhim
- Tinku

MANUFACTURED BY

M/s. K. K. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Dist: Murshidabad
Pin No.- 742122, West Bengal
Phone No.: 03483-253232,
Fax No.: 03483-253566

KOLKATA ADDRESS:

36, Maharshi Debendra Road, 3rd Floor Room No.- 308
Kolkata - 700 006, Phone No.: 2259-6990, 3093-2081
Fax No.: 033-2259-6989, (M) 9830423668

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbı eared to tread)

SPML

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street, Kolkata 700 016
Tel : 2229 8228, Fax : 2229 3882, 2245 7562
e-mail : info@subhash.com, website: www.subhash.com

Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)2229-8228.
Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020
Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8/2 Ulsoor Road,
Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15, Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
अर्थात् अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

Phone:

Gram "GANGJUTMIL"
Fax: + 91-33-245-7591
Telex: 021-2101 GANG IN

2226-0881
2226-0883
2226-6283
2226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 2634-6441/2644-6442
Fax: 2634 6287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly: Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain - Chairman

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 28114496, 28115086, 28115203
Fax: 28116184
e-mail: bhansali@mantraonline.com

With Best Compliments..... ?

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence, Coal India, CESC, Railways, Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer
From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv lever.
Current Transformer upto 66kv.
Dry type Transformer.
Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, KOLKATA - 700 016
PHONE: 2229-7346/4553, 2226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

शुभ कामनाओं सहित —

मनुष्य जीवन में ही सत्य कार्य करने का अवसर उपलब्ध होता है।

अहिंसा अमृत है, हिंसा विष है।

अनाम

PICK UP ALL U WANT UNDER ONE ROOF

▶▶Groceries ▶▶ Edible Oils ▶▶ Personal Care ▶▶ Imported Pastas, Chocolates, Sauces, Gift Items, etc. ▶▶Hygiene ▶▶Baby Care ▶▶Stationery ▶▶other Household Items

Stop

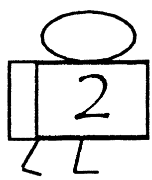

Stop

AT YOUR COMPLETE SUPERMARKET

NAHAR PARK

45/4A, Chakraberia Road (S), Kolkata - 700025

(Near Jadu Babu's Bazar)

Phone: 24544696

Store Timings : 7.00 am to 9pm

All days open except Thursday

FREE HOME DELIVERY

All Prices BELOW M.R.P.

PARKING AVAILABLE

With Best Compliments

BC JAIN JEWELLERS

Since 1926

B.C. JAIN JEWELLERS PVT. LTD.

22, Camac Street

3rd floor, Block-A

Kolkata - 700 007

Phone: 2283 6203 / 6204 / 0056

Fax : 2283 6643

Resi : 2358 6901, 2359 5054

Postal Registration No. SSRM/Kol/RMS/WB/R.N.P.-070/2004-2006.
Vol. XXVIII. NO. 3 TITTHAYARA June 2004
Registered with the Registrar of Newspapers for India
under R.N. No. 30181/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचाना चाहिये।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions

17/3, Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 2666-7212/7225